बेहद का वैराग्य - 01

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ जितना स्नेही होंगे उतना बेहद का वैराग्य होगा। यह है मधुबन का अर्थ अति स्नेही और इतना ही बेहद की वैराग्य वृत्ति। **अगर मधुबन के विशेष गुण जीवन में धारण करके जायें तो सहज ही सम्पूर्ण बन सकते हैं। एक स्नेह से दूसर बेहद की वैराग्य वृत्ति से कोई भी परिस्थितियों को सहज ही सामना करेंगे।**

➳ _ ➳ **सफलता के सितारे बनने के लिये यह दो गुण मुख्य मधुबन की सौगात ले जाना है। अभी ऐसा बदल कर दिखाओ जो सभी के आगे इग्जाम्पुल बनो।**

➳ _ ➳ अब एक सेकेण्ड भी नहीं गंवाना है। चेक आप कर सकते हो। **अब समय बहुत थोड़ा रह गया है। समय भी बेहद की वैराग्य वृत्ति को उत्पन्न करता है।**

➳ _ ➳ लेकिन समय के पहले जो अपनी मेहनत से करेंगे तो उनका फल ज्यादा मिलेगा। **जो खुद नहीं कर सकेंगे उन्हों के लिये समय हेल्प करेगा। लेकिन वह समय की बलिहारी होगी। अपनी नहीं। (26.01.1970)**

➢ वैराग्य

➳ _ ➳ वैराग्य की परिभाषा

→ **साधन होते हुए भी दूर रहना, यह है वैराग्य**

- **साधनों से वैराग्य धारण करना है**
    - साधन का उपयोग करते
    - साधना को कम नहीं कर देना है
- जब तक आपमे बेहद का वैराग्य उत्पन नही होता है
    - तब तक संसार की दुखी अशांत आत्माओ में
    - वैराग्य उत्पन हो ही नहीं सकता है
- सहयोगी आत्माओ को सहजयोगी बनाने के लिये
- उनकी वृत्ति में वैराग्य उत्पन करना है, उनमे वैराग्य
    - तपस्या के वातावरण द्वारा
    - साधना के वातावरण द्वारा
    - उनमे वैराग्य उत्पन करना है
- **तुम सब जड़े हो, फाउंडेशन हो**
- हमारी किरणें विश्व में फैलेगी
    - अगर हमारे अंदर मोह है, आसक्ति है, राग है
    - तो वही संसार में फैलेगी

- हमारा 1 1 संकल्प संसार तक पहुचता है

- संसार की स्थिति जो निचे जा रही है
    - **उसके लिये हम ही RESPONSIBLE है**
    - इसलिए स्वयं में वैराग्य वृति को धारण करना है

➢ वैराग्य वृति इमर्ज हो उसके लिये साधन कौन कौन से है ?

➾_ ➾ **संसार के दुखो का चिंतन करना**

➾_ ➾ **संसार की गिरती हुई हालतों का चिंतन करना**

➾_ ➾ **संसार के प्रति वैराग्य उत्पन करना है**

→ चिंतन करो की, यह संसार क्या है ?

- **विकारी संसार है**
- **अनित्य संसार है**
- **जूठा संसार है**
    - उसमे व्यक्ति फसें हुए है
- यहा आज तक **किसी की भी इरछाये आज तक पूर्ण नही हुई**
    - व्यक्ति कितना भी भागे दोड़े पर इरछा पूर्ण नहीं होती
- **इरछाओ का स्वभाव ही है असंतुष्टता**
- **वासना का स्वभाव है अतृप्ति**
- **मोह कभी भी आत्मा को तृप्त और शांत नही कर सकता है**
    - **मोह आत्मा को दुखी बना देता है**
    - **अतृप्त, अशांत कर देता है**

➾_ ➾ **समय की स्मृति वैराग्य दिलायेगी**

→ कौन सा समय चल रहा है ?

- संगमयुग का समय चल रहा है
- सदा खुश रहने का समय चल रहा है
    - **बाप खुशियों का अखूट खजाना तुम्हे बाटते है**
    - **इसलिए तुम्हारी ख़ुशी कभी गायब हो ही नही सकती**
    - **कोई भी बात तुम्हे दुखी कर ही नहीं सकती**
- हमारी ख़ुशी का REMOTECONTROL हमारी जेब में रखना है

→ क्या करने का समय चल रहा है ?

- भटकने का समय चल रहा है क्या ?
- भोजन और खानपान में दुबे हुए क्या ?
    - डूबने का समय चल रहा है ?
    - या तपस्या करने का समय चल रहा है ?

→ अभी स्थिति बनाने का समय चल रहा है

- अभी समय गया तो फिर वापस कभी नहीं आयेगा

→ लंबे समय का पुरुषार्थ ही है

- अचानक & EVEREADY

➽_ ➽ **हम यहा अतिथि है, वापस जाने की स्मृति वैराग्य दिलायेगी**

→ हम यहा महेमान है

- यह हमारा घर है ही नहीं
    - हमारा घर तो परमधाम ही है

➽_ ➽ **बार बार समसान घाट जाना और वैराग्य उत्पन करना**

→ अपने ही शरीर को लपटों में जलता हुआ देखना

- तो वैराग्य उत्पन होगा
    - संसार की **अनित्यता** का बोध होगा
    - संसार **असार** है उसका बोध होगा
    - यह **देह एक मिट्टी है** उसका का बोध होगा
    - यह देह का जो **सोंदर्य है, वह एक भ्रम है**

➽_ ➽ **देह से वैराग्य उत्पन करना**

→ देह सम्पूर्ण सत्य नही है

- इस देह में ही सारा संसार फसा हुआ है
    - देह को ही सबकुछ मानते है

➽_ ➽ **जब बेहद के वैरागी बनेगे**

→ **तभी बेहद के तपस्वी बन सकेंगे**